ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

महाराष्ट्र राज्य हिन्दी नाट्य महोत्सव, औरंगाबाद में

हिंदी विवि के नाटक 'एक बार फिर-गोदो' का प्रभावी मंचन

नाट्यकला एवं फ़िल्म अध्ययन विभाग की प्रस्तुति

एक बार फिर गोदो के मंचन के अवसर पर अपनी प्रस्तुति देते हुए छात्र

महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर के तापडिया नाट्यगृह में आयोजित 51 वें महाराष्ट्र राज्य हिन्दी नाट्य महोत्सव में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के नाट्यकला एवं फ़िल्म अध्ययन विभाग द्वारा 'एक बार फिर-गोदो' इस नाटक को प्रस्तुत किया गया।

महाराष्ट्र (नाशिक) के मशहूर नाटककार भगवना हिरे लिखित इस नाटक का अनुवाद तथा नई परिकल्पना के साथ निर्देशन, नाट्यकला एवं फ़िल्म अध्ययन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सतीश पावड़े ने किया।

सुरभि विप्लव (डीडी) रोहित कुमार (गोगो) जैनेंद्र कुमार दोस्त (गोदो) तथा धर्मप्रकाश (लडका) ने सफलता पूर्वक अपनी भूमिकाएं अदा की। वस्त्र एवं रूपसज्जा तिलिनी दर्शनी मूनसिंघे की थी। प्रकाश विन्यास-जैनेन्द्र कुमार दोस्त-चैतन्य आठले का था। ध्वनि एवं पार्श्वसंगीत-धर्मप्रकाश का था, दृश्यविन्यास भी उन्होनें ही किया था। राजदीप राठौड ने प्रस्तुति सहायक के रूप में कार्य किया।

नाटक का निर्माण विभागाध्यक्ष प्रो. रवि चतुर्वेदी ने किया। डॉ. रयाज़ हसन तथा अखिलेश दीक्षित ने विशेष सहयोग दिया। निर्माण प्रबंधन के रूप में अश्विनी कुमार सिंह ने कार्य किया। महाराष्ट्र के साथ छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, गोवा के नाट्यसंघो के नाट्यकृतियोंका मंचन इस समारोह में किया जा रहा है।

नाटक के बारें में

बेकेट के नाटक 'वेटिंग फ़ॉर गोदो'की अंतरराष्ट्रीय स्तर अपनी एक अलग पहचान है। एब्सर्ड रंगमंच का पर्याय बन चुके इस नाटक से प्रेरणा लेकर मराठी के नाटककार भगवान हिरे ने इस नये नाटक की रचना की है। प्रस्तुत नाटक लेबॉरेटरी थिएटर की परिकल्पना के तहत एक नये दृष्टिकोण व कथ्य के साथ मंचित किया गया।

गोगो, डिडी, गोदो व लड़का वही चरित्र है जो 'वेटिंग फ़ॉर गोदो' में है, किंतु 'डिडी' इस नाटक में एक स्त्री चरित्र है। स्त्री-पुरूष संबंधो का एक नया दर्शन इस नाटक में कराया गया है। नियति, भाग्य प्रतीक्षा, ईश्वर की भ्रामक व झूठी आस्था और भगवान बुद्ध की 'अत्त दीप भव' (स्वयं को प्रकाशित करें) की अवधारणा को इस नाटक में प्रस्तुत किया गया है। अंत में गोदो रूपी गॉड का वध कर अस्तित्ववादी दर्शन को भी इस नाटक में दर्शाया गया है।

पारंपरिक कथ्य को तोड़कर एक नये आशय की, एक नये दृष्टिकोण की रचना इस नाटक को नई विचारधारा से जोड़ती है। इस नाटक की कोई पारंपरिक कहानी नहीं है, कोई पारंपरिक नाटयतंत्र का भी अवलंबन नहीं है। समय, काल, स्थल के निर्देशों से परे एक अहसास, अनुभूति एवं विचारों को जगाने का प्रयास इस नाटक ने किया।

एक नयी आज़ादी, एक नयी स्वतंत्रता, एक नयी सोच को उजागर कर इस नाटक ने दर्शको के मस्तिष्क में कई सवाल खड़े किये। मौजूदा राजनिती, भ्रष्ट्राचार, महंगाई, वर्णवाद, वंशवाद, के प्रश्नों को लेकर भारतीय मानस में व्याप्त अस्तित्व के प्रश्न भी इस नाटक में हाशिएं पर लाये गये। आज का अराजक प्रतिबिम्ब

के रूप में इस नाटक में व्याप्त है। अभिनय, प्रकाश, संगीत ने दर्शको में समा बांधा। एक नई अनुभूति के साथ इस नाटक का आस्वाद लिया गया। समकालीन परिप्रेक्ष्य में उत्तर आधुनिकता को व्याख्यायित करता यह नाटक भारतीय परिप्रेक्ष्य में रचा गया है। कथ्य, शिल्प, शैली में निर्देशक डॉ. सतीश पावड़े ने नये अर्थ एंव दृष्टी के साथ निर्देशित किया है।

समकालीन राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा स्त्री-पुरूष संबंधो को परिप्रेक्ष्य में एक नये यथार्थ के साथ एक नये समाज की निर्माण की जरूरत पर यह नाटक व्यक्त करता है। चिंतन, विचार, दर्शन को नये ढंग से परिभाषित कर अस्तित्ववादी धारणाओं के एक नया धरातल प्रदान करता है। प्रायोगिक तथा सर्जनशिलता के साथ यह नाटक दर्शको को सोचने पर मजबूर करता है। थिएटर ऑफ कृएल्टी, एपिक थिएटर, अॅब्सर्ड थिएटर, थर्ड थिएटर की परिकल्पनाओं के साथ यह नाटक नव यथार्थ को भी परिभाषित करता है। समकालीन यथार्थ की यह नाटक एक सक्षम अभिव्यिक्ति है।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी